प्रातः क्लास 7-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

"ऊंच से ऊंच बाप याद है? विश्व की बादशाही याद है? यह सावधान किया जाता है ऐसे कब कोई कहते नहीं हैं। यहां तो बाप दिलाते हैं। बेहद का शिव बाबा याद है? वर्थ राईट विश्व की बादशाही याद है? बाप को याद करने से तो रोमांच एकदम खड़ी हो जानी चाहिए। बेहद खुशी का पारा चढ़ जाना चाहिए।"
(... याद की यात्रा ....)

ओमशान्ति। गायन भी है बापसे एक सेकण्ड में वरसा। अर्थात जीवनमुक्ति। और तो सभी हैं जीवन बन्धन में। एक ही त्रिमूर्ति गोले वाला चित्र जो है, बस यही मुख्य है। यह बहुत बड़े2 होनी चाहिए। अंधों के लिये तो बड़ा चाहिए ना जो अच्छी तरह से देख सकें। क्योंकि अभी सभी की नज़र कम है। बुधि कम है। बुधि कहा जाता है तीसरा नेत्र को। तुम्हारी बुधि अभी खुली हुई है। खुशी में जिनके रोमांच खड़े नहीं होते हैं गोया शिव बाबा को याद करते ही नहीं हैं। तो कहेंगे ज्ञान का तीसरा नेत्र थोड़ा खुला है। शुभ है। बाप कहते हैं कोई को भी शार्ट में यह समझाना है। बड़े2 मेले आदि लगते हैं, बच्चे जाते हैं सर्विस करने। वास्तव में यहएक ही चित्र बस है। परन्तु दो चित्र भी हो तो हर्जा नहीं हैं। बाप ड्रामा का और झाड़ का अथवा कल्प वृक्ष का और 84 के चक्र का राज़ समझाते हैं। ब्रहमा द्वारा बाप का यहवरसा मिलता है। यह भी अच्छी रीति क्लीयर है। यह चित्र तो बहुत बड़ा इन से चौगुना होना चाहिए। ऐसी युक्ति ये फोल्डींग बनाना चाहिए। बाबा की मुरली बाहर वाले भी सुनेंगे बच्चे भी सुनेंगे तो ख्याल जरूर चलेगा ऐसा बड़ा फोल्डींग चित्र हो। ऐसी अकल बच्चों में आना चाहिए। बाप जिस बात के लिये समझाते हैं वह जरूर अकल आवेगा। इस चित्र में सभी आ जाता है। और इतने सभी चित्रों की दरकार ही नहीं। यही चित्र बहुत बड़े2 अक्षरों में हो। लिखते भी हो जीवनमुक्ति गाड फादरली वर्थ राईट है* होनहार विनाश के पहले। विनाश तो जरूर होना ही है। ड्रामा के प्लेन अनुसार आप ही समझ जावेंगे। तुम्हारे समझाने की भी दरकार नहीं रहेगी। बेहद के बाप से बेहद का एक वरसा मिलता है। यह तो बिल्कुल ही पक्का याद रहना चाहिए। परन्तु माया तुम से भूला देती है। समय बीतता जाता है। गायन भी है बहुत गई थोड़ी रही। इनका अर्थ भी इस समय का है। बहुत गई ... बाकी थोड़ा रहा है। स्थापना तो हो रही है। बाकी थोड़ा समय रहा है। विनाश के लिये। थोड़ी कीभी थोड़ी रहती होगी। आज आठ वर्ष फिर सात वर्ष, फिर 6 वर्ष कहेंगे, फिर 4-5 वर्ष कहेंगे। विचार किया जाता है फिर क्या होगा। अभी तो जागते ही नहीं। पीछे जागते जावेंगे। आंखें खुली होती जावेंगी। यह आंखें नहीं। बुधि की बात है। छोटे2 चित्रों से इतना मजा नहीं आता। बड़े2 बन जावेंगे। सायंस भीकितनी मदद देती है। विनाश में माया मदद देती है ना। विगर कोई खर्चे तुमको कितनी मदद देते हैं। तुम्हारे लिये बिल्कुल सफाया कर देते हैं। यह तो बिल्कुल ही छी छी दुनिया है। अजमेर में स्वर्ग कायादगार है। यहां दिलवाला मन्दिर स्थापनाका यादगार है। परन्तु मनुष्य समझ थोड़े ही सकते हैं। अभी तुम समझदार बने हो। भल मनुष्य कहते हैं हम नहीं जानते कि आठ वर्ष में विनाश हो जावेगा। समझ में नहीं आता। एक कहानी है ना बोलो शेर रे शेर। नहीं मानते थे। आखिर एक दिन आकर सभी गईयां खा गया। तुम भी कहते रहते हो यह पुरानी दुनिया गई कि गई। मनुष्य समझते हैं यह तो इन्हों के गपोड़े हैं। तुम तो जानते हो कि यह दुनिया गई कि गई। बहुत समय गया बाकी थोड़ा रहा। सारी नालेज बुधि में रहनी चाहिए। आत्मा ही धारण करती है ना। बाप की भी आत्मा में ज्ञान है। वह जब धारण करते हैं तबदेते हैं। जरूर नालेज है तब तो नालेजफुल गाड फादर कहा जाता है ना। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। अपन को तो जानते हो ना। और सारी सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है वह भी नालेज है। इसलिये अंग्रेजी में नालेजफुल अक्षर अच्छा है। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीजरूप है तो उनको नालेजफुल कहते हैं। तुम यह जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। शिव बाबा तो है ही नालेजफुल। यह अच्छी रीत बुधि में रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि सभी की बुधि में एक सी धारणा होती नहीं। भूल लिखते भी हैं परन्तु धारणा कुछ भी नहीं होती। नाम मात्र लिखते हैं। बाबा किसको भी नहीं कहेंगे। सिर्फ कागज को बताते हैं। कागज क्या करेंगे। कागज

से तो कोई समझेंगे नहीं। इस चित्र से बहुत अच्छा समझेंगे। बड़ी ते बड़ी नालेज है तोअक्षर भी बहुत बड़े2 होनी चाहिए। बड़े ते बड़े चीज़देखें मनुष्य समझेंगे इन में जरूर कुछ सार है। स्थापना और विनाश भी लिखा हुआ है। राजधानी की स्थापना ·· यह है गाड फादरली वर्थ राईट। हरेक बच्चे का हक है जीवनमुक्ति पाने का। सभी जीवनबन्धन में हैं। पहले शान्तिधाम में जावेंगे फिर सुखधाम में। सुखधाम को जीवनमुक्तिकहेंगे। तो बच्चों को बुधि चलानी चाहिए। यह दो चित्र खास बड़े2 बनी हुई हो। बीच का जोड़ दिखाई पड़ें तो भी हर्जा नहीं है। मुख्य चित्रहै ना। बहुत बड़े2 अक्षर हो तो मनुष्य समझेंगे कि ब्रह्माकुमारियों ने इतने बड़े चित्र बनाये हैं जरूर कुछ नालेज है। हम अंधों को दिखाने लिये इतने बड़े2 चित्र आदि बनाते हैं। मनुष्यों को देखना है दिन में, रात को भी अगर दिखानाहै तो बगल में लाईटस दिखा सकते हैं। सिट के ऊपर पेंटींग अच्छी होता है। नाटक वाले कितने बड़े2 चित्र आदि बनाते हैं। वह कोई खराब थोड़ेही होती है। 2-3 वर्ष चलते हैं फिर नया बनाते हैं। तो जहां तहां तुम्हारे यह बड़े2 चित्र लगे हुये हों तो पूछेंगे यह क्या है? बोलो इतने बड़े2 चित्रतुम्हारे समझने लिये बनाये हैं। इसमें क्लीयर लिखा हुआ है। बेहद का वरसा इन्हों को था ना। कल की बात है। आज वह नहीं है। क्योंकि 84 जन्म पुनर्जन्म लेते2 नीचे आ गये हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान, पूज्य से पुजारी भी बनना ही है। ज्ञान और भक्ति। पूज्य और पुजारी खेल है ना। आधा आधा में पूरा खेल बना हुआ है। तो ऐसे बड़े2 चित्र बनाने की हिम्मत चाहिए। जो फिर सर्विस के शौकिन हैं एक एक उनके चार्ज में देवें। देहली के तो कोने2 में सर्विस करनी है। मेले-मलाखड़े में ले जानी चाहिए। पिछाड़ी में तुमको यह चित्र ही बहुत काम में आवेंगे। त्रिमूर्ति-गोला यह है सबसे मुख्य। मनुष्य देखकर वन्डर खावेंगे। तिथ-तारीख भी क्लीयर है। बड़ा चित्र होगा तो इस में जगह भी बड़ी होगी तो अक्षर भी बहुत आ सकते हैं। फिर तो तुम्हारी सर्विस भी बहुत बढ़ जावेगी। यह बहुत अच्छी चीज़ है। अंधों के आगे जैसे कि आई-ना है। अंधों को पढ़ाया जाता है। पढ़ती तो आत्मा है ना। परन्तु आत्मा के आरगन्स छोटे हैं तो उनको पढ़ाने लिये चित्र आदि दिखाई जाती है। फिर थोड़ी बड़ी होती है तो दुनिया का नक्शा दिखाते हैं। फिर वह सारा नक्शा बुधि में रहता है। अभी तुम्हारी बुधि में भी यह ड्रामा का सारा चक्र है। इतने सभी धर्म हैं। कैसे2 नम्बरवार आये हैं, फिर चले जावेंगे। वहां तो एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म हैजिसको स्वर्ग हैविन कहते हैं। बाप के साथ योग लगाने से आत्मा पतित से पावन बन जावेंगे। भारत का प्राचीन राजयोग भी मशहुर है। योग अर्थात याद। बाप भी कहते हैं मुझ बाप को याद करो। यह कहना पड़ता है कि मुझे याद करो। बच्चे तो आटोमेटकली बाबा मामा कहते रहते हैं। वह है लौकिक मात-पिता। यह फिर है पारलौकिक। जिसका हो गायन है तुमरी कृपा ते सुख घनेरा जिनको दुःख है वही गाते हैं। सुख में तो कहने की दरकार ही नहीं रहती। दुःख में है तब पुकारते हैं। अभी तुम समझ गये होयह मात-पिता है। बाप कहते हैं ना दिन प्रति दिन तुमको गुहय पायन्टस सुनाता हूं। आगे कब मालूम था क्या मात-पिता किसको कहा जाता है। अभी तुम समझते होपिता तो उनको ही कहा जाता है। पिता से अर्थात शिव बाबा से वरसा मिलता है ब्रह्मा द्वारा। माता भी चाहिए ना क्योंकि बच्चों को एडाप्ट करना है। यह बातें किसकी भी ध्यान में नहीं आवेंगी। तो बाबा घड़ी2 कहते हैं मीठे2 बच्चो बाप कोयाद करते रहो। लक्ष्य मिल गया फिर भल कहां भी जाओ। विलायत में जाओ, सिर्फ सात रोज का कोर्स किया। तो बस है। बाप से वरसा तो लेना ही है। याद से ही आत्मा पावन बनेगी। स्वर्ग का मालिक बनेंगे। यह लक्ष्य तो बुधि में है। फिर भल कहां भी जावे। मुरली की भी दरकार नहीं। सारा गीता का ज्ञान इस वेज में है। कोई को पूछने की भी दरकार नहीं रहेगी कि क्या करना है। बाप से यह वरसा लेना है तो जरूर बाप को याद करना है। तुमने यहवरसा बाप से अनेक बार लिया है। ड्रामा का चक्र रिपीटहोता रहता है ना। अनेक बार तुमने टीचर से पढ़कर के कोई न कोई प्राप्ती करते हो। पढ़ाई में बुधि योग टीचर साथ होता है ना। इम्तहान चाहे छोटा हो चाहे बड़ा हो। पढ़ती तो आत्मा है ना। इनकी भी आत्मा पढ़ती है। तो टीचर को एमआबजेक्ट को याद करना है। सृष्टि का चक्र भी बुधि में रखनाहै। बाप और —

वरसा याद करना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। जितना धारण करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। अच्छी रीत याद करते रहते हैं फिर तो यहां आने की भी दरकार नहीं। परन्तु फिर भी ठीक है, ऐसा बाप जिससे बेहद का वरसा मिलता है उनसे मिलकर तो आवें। मंत्र लेकर सभी जाते हैं ना। तुमको तो बहुत भारी मंत्र मिलता है। नालेज तो सारी बुद्धि अच्छी रीत बुधि में है। अभी समझते हो जास्ती टाईम वेस्ट भी विनाशी कमाई पीछे नहीं करना है। वह तो सभी मिटटी में मिल जावेगा। बाप को कुछ चाहिए क्या! कुछ भी नहीं। कुछ भी खर्चा आदि करते हैं सो तो अपने लिये ही करते हैं। इसमें तो पाई का भी खर्चा नहीं है। कोई गोली वा टैक्स आदि तो खरीद नहीं करनी है। कुछ भी नहीं। तुम लड़ते हो ना सारी दुनिया से। परन्तु गुप्त। वह सभी खत्म हो जावेंगे तुम्हारी जीत हो जावेगी। तुम्हारी लड़ाई देखो कैसी है। इसको कहा जाता है योगबल। सारी गुप्त बात है। इसमें किसको मारने की दरकार नहीं। तुमको सिर्फ बाप को याद करना है। इन सभी का मौत ड्रामा में नूंध है। हर 5000 वर्ष बाद तुम योगबल से अपनी पढ़ाई पढ़ते हो। पढ़ाई पूरी हुई फिर प्रारब्ध चाहिए ना नई दुनिया। पुरानी दुनिया के विनाश के लिये यह नेचरल कैलेमिटिज़ हैं। गायन भी है अपने कुल का विनाश कैसे करते हैं। कितना बड़ा कुल है। सारा युरोप आ जाता है। यह भारत (ईण्डिया) तो अलग कोने में है। बाकी सभी खलास हो जाने हैं। योगबल से तुम सारे विश्व पर जीत पाते हो। पवित्र भी बनना है इन (ल०ना०) जैसा। यह कब नंगन नहीं होते। वहां क्रिमनल आई ही नहीं होती तो नंगन कैसे होंगे। आगे चलकर तुमको बहुत सा० होंगे। आगे चलकर तुमको बहुत सा० होते रहेंगे। अपने देश के नज़दीक आने से फिर झाड़ दिखाई पड़ते हैं ना तो खुशी होती है। अब आकर पहुंचे हैं अपने घर के नजदीक। तुम भी घर चल पड़े हो ना अपने सुखधाम। बाकी थोड़ा समय है। स्वर्ग से बिदाई लिये कितना समय हो गया है। अभी फिर स्वर्ग नजदीक आ रहा है। तुम्हारी बुधि चली जाती है ऊपर। वह है निराकारी दुनिया। जिसको ब्राह्मण्ड, ब्रह्मतत्व कहते हैं। हम वहां के रहने वाले हैं। यहां 84 का पार्ट बजाया हम जाते हैं। तुम बच्चे हो आलराउण्ड। पूरे 84 जन्म लेने वाले को आलराउण्ड कहा कहा जाता। देरी से आने वाले को आलराउण्ड नहीं कहेंगे। बाप ने समझाया है मैक्सीमम और मिनीमम कितने जन्म लेते हैं। एक जन्म तक भी है। पिछाड़ी में सब फिर चले जावेंगे वापिस। नाटक पूरा हुआ खेल खलास। अभी बाप समझाते हैं मुझे याद करो तो अन्त मत सो गति हो जावेगी। बाप के पास परमधाम में चले जावेंगे। उनको कहते हैं मुक्तिधाम। फिर सुखधाम। यह है दुःखधाम। ऊपर से हरेक सतोप्रधान, सतो रजो तमो में आवेंगे। एक जन्म होगा तो उसमें भी चार स्टेजस पास करेंगे। कितना अच्छा बच्चों को बैठ समझाते हैं। फिर भी याद नहीं करते। बाप को भूल जाते हैं। नम्बरवार हैं। बच्चे जानते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होता है। नम्बरवार रुद्र माला बनती है। कितने करोड़ों की रुद्र माला है बेहद की! विष्णु की माला भी बेहद की है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। दोनो का सरनेम देखो यह प्रजापिता ब्रह्मा है ना। आधा कल्प बाद फिर आता है रावण। डीटीज्म। फिर इस्लामिज्म। बुधिज्म। क्रिश्चनिज्म आदि2। आदम-बीबी को भी सभी याद करते हैं। पैराडाईज को भी यादकरते हैं। भारत पैराडाईज स्वर्ग था। बच्चों को खुशी तो बहुत होनी चाहिए। बेहद का बाप, ऊंच ते ऊंचभगवान ऊंच ते ऊंच पढ़ाते हैं। उच्च ते उच्च पद मिलता है। सबसे उच्च ते उच्च टीचर है बाप। टीचर भी है फिर साथ भी ले जावेंगे। ऐसा बाप क्यों नहीं याद रहेगा! खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। परन्तुयुध का मैदान है। माया ठहरने न देती है। घड़ी2 गिर पड़ते हैं। बाबाके पास एक आया था, कहता था और सभी विकारों को जितना बड़ा सहज है। बाकी मोह बहुत ही कड़ा है। समझाया गया है भगवानुवाच काम महाशत्रु है। फिर भी कहते मोह को जीतना बड़ा मुश्किल है। अरे तुम्हारी तो है मनुष्य मत। ईश्वरीयम त को समझे ही नहीं हैं। अपनी ही बात करते रहते हो। हरेक मनुष्य की अपनी2 बुधि है ना। तकदीर में नहीं है तो फिर समझते भी नहीं। अरे ईश्वर कहते हैं काम महा शत्रु है, कहे हां हो सकता है परन्तु मोह को तो समझता हूं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।